Vol 3 Issue 4 Jan 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 4, Jan. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

मध्ययुगीन भारत में डाक व्यवस्था का स्वरूप एवंम. महत्वः एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. डि.एस. कडव

प्रस्तुतकर्ता , इतिहास विभाग प्रमुख , जे.एम. पटेल महाविद्यालय, भंडारा.

सारांश **:**

ड़ाक ऐसी व्यवस्था है जो शासन व्यवस्था में मुख्य भूमिका निभाती थी । दिल्ली के सुल्तानों ने डाक व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया था[1]। बी.एस. लुणीया लिखते है, "सूचानाऐं, संदेश, आदेश आदि के लाने ले जाने, तथा परस्पर संम्पर्क बनाये रखने के लिये राज्य में डाक–विभाग होता था। विभिन्न क्षे़त्रों में डाक चौकियॉ स्थापित की गयी थी, जहॉ डाक लाने ले जाने वाले हरकारे आकर मिलते थे। प्रत्येक कोसपर तेज दौड़नेवाले डाक के हरकार रखे जाते थे। वे पत्रों व संदेशों का एक थैला हाथ मे रखते थे और दुसरे हाथ में लगभग दो मीटर लंबी लाठी जिसमें बड़े–बड़े घुंघरू या छोटी–छोटी घंटिया बंधी होती थी। कभी कभी उनके सिरों की पगड़ी से भी छोटी–छोटी घंटिया या घुंगरू बंधे होते थे।

प्रस्तावना :

वे डाक को लेकर दुसरे कोसपर तैयार हरकारे को डाक देने और लाने के लिये तीव्र गती से दौड़ते थे और उनके इस प्रकार दौड़ने से जो घुंघरू बजते थे उनकी मधुर आवाज से लोग मान लेते थे कि डाक आ जा रही हैं। इन डाक हरकारों के माध्यम से कभी–कभी शीघ्र दंड दिये जानेवाले अपराधियों को और सुलतान या अधिकारी के लिये विशिष्ट खाद्य पदार्थ और फल भी भेज जाते थे। कभी कभी डाक घोड़ो पर भी जाती थी। इसके लिये विशेष अश्वरोही नियुक्त होते थे। डाक चौकियों पर ऐसे अश्वारोही और हरकारे होते थे। डाक चौकियों पर जो जनमार्ग पर बनी होती थी, यात्रियों और जनसाधारण के लिये भी विश्राम स्थल होते थे। उनकी सुविधा के लिये वहॉ पानि की बावड़िया और कुए, आवास की व्यवस्था, दैनिक वस्तुओं के कय–विकय के लिये दुकाने आदि होती थी।"[2]

अलाउद्दीन खिलजी ने तो डाक व्यवस्था को महत्वपूर्ण रूप से स्थापित किया। प्रत्येक चौकी पर घोड़े रखे जाते थे व प्रत्येक आधा व 1/4 कोस दूर पर डाक ले जाने वाले धावक रखे गए और रिपोर्ट लिखने वाले व्यक्ति को नियुक्त किया गया।

इस संबंध में प्रतापसिंह कहते है,"अल्लाउद्दीन कुशल डाक व्यवस्था स्थापित की, जिससे सुलतान और अधिकारीयों के बीच समाचारों का त्वरित और व्यवस्थित आदान–प्रदान सम्भव हुआ। हम अलाई फौजें के दक्षिण अभियान के सिलसिले मे बता चूके है कि कोई भी सैनिक अभियान भेजते समय राजधानी और सेना के गन्तव्व स्थान के मध्य थोड़ी–थोड़ी दूर पर चौकिया स्थापित की जाती थी जिनपर घुडसवार नियत रहते थे और इस तरह दिल्ली से सेना को और सेवा से दिल्ली के समाचार का आदान–प्रदान होता रहता था। चौकियों के कूशल कार्य के कारण ही सूलतान को तुरन्त ही विद्रोहों की सूचना मिल जाती थी। तथ्यों और बरनी के निर्देशोसे यही प्रकट होता है कि अल्लाउद्दीन के समय डाक सेवा पर्याप्त व्यवस्थित थीऔर

सूलतान के विभिन्न नियमों को लागू करने में यह बहुत सहाय्यक रही होगी।"[3]

समकालीन डाक प्रणाली का वर्णन करते हुए इब्नबतूतन 1334 मे लिखता है की, घुडसवार और पैदल संम्वादवाहक के द्वारा डाक एक स्थान से दुसरे स्थान तक पहुँचती थी।[4]

अफीफ ने सुल्तान फिरोज तुगलक के समय की एक घटना का वर्णन करते हुए उस काल के संचार व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुये लेखा है कि "जब सुल्तान कन्नौज से अवध के यात्रा करते समय जौनपुर पहुँचा तो वहाँ रास्ता भूल गया लगभग 6 महीने तक राजधानी से उसका सम्बन्ध कटा रहा अन्त में बड़ी खोज के बाद एक रास्ता मिला तब सुल्तान ने अपने सैनिकों को आदेश दिया किवह अपने परिवार को अपने सुरक्षित होने का एक पत्र लिखें। तथा उस पत्र को एक ऊट की पीठ पर लादकर दिल्ली पहुँचाया गया।[5]सिकन्दर लोदी ने डाक चौकी की पुनः स्थापना की और यह एक स्थाई व्यवस्था बन गई। इसका इस्तेमाल सैनिक व नागरिक दोनो मामलो में किया जाता था।

मुगल काल में शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान को डाक भेजने की व्यवस्था थी। इसके लिए दो प्रकार के माध्यमों का उपयोग किया जाता था– पैदल डाक धावक और घुड़सवार डाक धावक। टैबरनियर के अनुसार यह पैदल धावक घुड़सवार रात दिन दौड़ते थे। राजस्थान में डाक वितरण के लिए ऊँटों का प्रयोग किया जाता था।[6] बाबर ने भी प्रत्येक 9 कोस के फासले पर टॉवर बनाकर डाक प्रणाली की ओर ध्याने दिया था। उसने आग्रा से काबुल के बीच सड़क इसलिये बनवाई थी की उससे संम्वाद उपलब्ध होते रहे। लेकिन बाबर के शासन काल तक डाक व्यवस्था केवल सम्राट तक ही उपलब्ध थी।[7]

शेरशाह पहला शासक था जिसने डाक व्यवस्था का उचित प्रबन्ध किया। जो उसके प्रशासन की सफलता का यह प्रमुख कारण भी था। उसने प्रत्येक दो कोस की दूरी पर स्थिति सराय में दो घोड़ों को रख दिया था जो समाचार लाते व ले जाते थे। शेरशाह ने 3400 घोड़ों के अलावा 5000 हाथियों को भी समाचार लाने के काम में लगा रखा था। उसके साम्राज्य में 1 लाख 13 हजार गांव थे शेरशाह प्रत्येक गांव का हाल जानना चाहता था। बंगाल में 40 किले थे ओर उन सभी से नियमित रूप से शेरशाह के पास समाचार आता था। डॉ. कालिकारंजन कानूनगो ने लिखा है की, शेरशाह ने बराबर फासलों पर सरांयोंका निर्माण करवाकर डाक चौकीयॉ स्थापित कर दी थी। लेकिन शेरशांह से पूर्व भी भारत में सुलतानों और अमिरोंकी डाक एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचती थी।

डॉ. आशिर्वादीलाल श्रीवास्तव ने लिखा है कि, "शेरशाह ने डाक अथवा सूचना विभाग के कर्मचारीयों के लिए अश्वपडावों की व्यवस्था कि थी। सराये विशेष रूप से डाक विभाग के कर्मचारीयों और हरकारों के लिये जोकी शाही डाक ले जाते थे, विश्राम शालाओं का प्रयोजन पुरा करती थी। इन कर्मचारीयों के लिये यहाँ भोजन सामग्री की व्यवस्था रहती थी। सडके और सरायें केवल सैनिक दलों के यातायात के लिये ही उपयुक्त नहीं थी, बलकी यह डाक विभाग अथवा डाक चौकीयों का भी काम करती थी। वे राज्य के सुदुर भागों के समाचार सरकार तक पहुँचाती थी। यह पद्धती इस देश के लिये नयी नहीं थी बल्कि शेरशाह ने इसको फिरसे संचालित किया था और इसमें आवश्यक सुधार भी किये थे।"[8]

जहाँगीर के काल में चार–पाच कोस के फासले पर हर गांव मे पैदल संदेशवाहक रहते थे जो डाक पहुँचाते थे। दिल्ली से अहमदाबाद पहुँचने में एक संदेशवाहक को केवल 12 दिन का समय लगता था।

यद्यपि मुगल सम्राटों ने कबुतरों के द्वारा संदेश भिजवाने की परीपाटी को प्रोत्साहीत नहीं किया था लेकिन फिर भी जहाँगीर अपने अनुभव के आधार पर लिखता है की, उसने शासन काल में ऐसे कबुतर उपलब्ध थे जो मंडूसे बुराहनपूर संदेश पहुँचाते थे। कबुतरों को संदेशवाहक के रूप में इसलिये प्रयोग में लेते थे जिससे कि बादशाह सलामत के आगमन का पता चलता रहें।[9]

सामान्य जनता की सुचना देने के लिये मुसलमान शासकों ने "वाकया नवीस" नियुक्त कर रखे थे। गुप्तचर भी थे जो "खुफिया नवीस" कहलाते थे। गुप्तचर अपना संदेश शीघ्र से शीघ्र सम्राट तक पहुँचाते थे।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है की, डाक प्रणाली केवल उच्च वर्ग के लोगों के लिए उपलब्ध थी। निम्नव्यक्तियों को यह सुविधा उपलब्ध नहीं थी। जिन व्यक्तियों को एक स्थान से दुसरे स्थान पर संदेश भेजने होते थे उनको स्वयं नौकर रखने पड़ते थे।

डॉ. आशिर्वादीलाल श्रीवास्तव ने कहाँ है की, मुगलशासन के अंतिम दिनों में समाचार एवं डाक सुप्रिटेन्डेन्ट का सलग विभाग था और उसका प्रदान यह था। इसके अधिकार में समाचार लेखक, गुप्तचर, और संवादवाहक होते थे जो सारे साम्राज्य में नियुक्त किये जाते थे। यह लोग अपने अपने क्षेत्रों की घटनाओं की सुचना भेजा करते थे। इसके अतिरिक्त प्रांतिय सुप्रिटेन्डेन्ट भी होते थे, जो शाही–दरोगा–ए–डाकचौकी की आज्ञानुसार काम करते थे। यह लोग हर सप्ताह समाचारों का सारांश राजधानी को भेजा करते थे।[10]

अकबर ने पूरे साम्राज्य में चौकियॉ स्थापित कराई थी। प्रत्येक चौकी के बीच की दूरी 5 कोस थी। हर एक चौकी में दो घोड़े और दो पैदल धावक तैनात किए गए थे। उन्हें मुगल दरबार में सामान्य पत्र लेकर

आना जाना पड़ता था। पैदल धावक 24 घंटे में 50 कोस की दूरी तय करता था। इसीलिए आगरा से अहमदाबाद जो लगभग 500 मील की दूरी पर था 5 दिनों के भीतर एक पत्र पहुँचता था। जासूसों द्वारा भी समाचार मिलता था तथा गुप्तचर भी डाक चौकी का इस्तेमाल करते थे। वाकियानवीस और खुफियानवीस अपने क्षेत्र की घटनाओं की रिपोर्ट प्रति सप्ताह बादशाह को भेजते थे।[11]

डाक की सुरक्षा के लिए प्रान्तों के सूबेदार और स्थानीय पुलिस अधिकारी जिनके क्षेत्र से डाक जाती थी, उत्तरदायी होते थे। स्थानीय अधिकारीयों को आदेश थे कि वे अपने अपने क्षेत्र में डाक की सुरक्षा के लिए समुचित व्यवस्था करें।[12]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार मध्ययुग में सल्तनत और मुगल शासकोंने डाक व्यवस्था सूचारू एवं प्रबल बनाने के लिये कदम उठाये । इस कदम से गतिमान एवं सक्षम प्रशासन के लिये डाक व्यवस्था का प्रभावी होना कितना आवश्यक और महत्वपूर्ण था, इसका ज्ञान इन शासकोंको था यह स्पष्ट होता है। इनमें से जिन शासकोंने परंपरागत डाक व्यवस्था में सुधार करके नयापन लाया, वह शासक सफल शासक के रूप में उभर सके । इन शासकों में अल्लाउद्दीन खिलजी, शेरशाह एवं अकबर शामिल हैं। शेरशाह अल्पकाल में कार्यक्षम प्रशासकीय व्यवस्था अमल में लाने में सफल हुआ। इस सफलता में उसने परंपरागत डाक व्यवस्था में किये उपयुक्त सुधार बड़ी मात्रा मे सहायकारी सिध्द हुये।

अंत में कहॉ जा सकता है की, जिन शासकों ने अपने कार्यकाल में प्रभावी एवं सूचारू डाक व्यवस्था अमल में लायी, वह प्रभावी ढंग से शासन कर सके। उनके कार्यकाल में विद्रोह की तादाद कम हुई, या वह शासक विद्राह दबाने में सफल हुये और अधिक काल तक शासन कर सके। आधुनिक शासकों के लिये यह संदेश महत्वपूर्ण हैं। यदी उनको भी शासन कार्य सूचारू एवं प्रभावी ढंग से करना है तो आधुनिक एवं कार्यक्षम संचार व्यवस्था निर्माण करना अनिवार्य है। तभी वह सफल शासक कहलायेंगे। प्रदेश में कानून एवं शांतिव्यवस्था बरकरार रख सखेंगे। राष्ट्र के विकास एवं प्रगती के लिए यह जरूरी है।

इसके अलावा आधुनिक काल में आतंकवाद में बढों त्तरी होने सें राष्ट्र की सुरक्षा को गंभीर खतरा पैदा हुआ है। आतंरीक एवंम बाहय सुरक्षा का प्रश्न गंभीर बन चुका है। सिमा पार आतंकवादी गतिविधीयॉ रोजाना बढती जा रही है । भारत समेत विश्व के लगभग सभी देशो कों इस समस्या का सामना करना पड रहा है। इस देश में डाक व्यवस्था प्रभावी है, उस देश को इन समस्योंसे से निपटना संभव हो रहा है। यही संदेश इस शोधनिबंध के माध्यम से दिया जा सकता है।

संदर्भसूचीः–

1. राधेशाम – सल्तनतकालीन सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास, इलाहाबाद, 1987 पृ. 162
2. बी.ए. लुणीया – पूर्व मध्यकालीन भारत का राजनितीक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रथम संस्करण, पृष्ठ. 870
3. प्रतापसिंह – मध्यकालीन भारत (1200–1526) जयपुर, 1988 पृष्ठ 223.
4. डॉ. वी.एस. भार्गव – मध्ययुगीन भारत की समस्यांये (1200–1707) 1981 ग्वालीअर, भोपाल पृष्ठ. 167.
5. ओ.पी. सिंह – भारत का आर्थिक इतिहास, इलाहाबाद 1977 पृष्ठ. 43
6. ओ.पी. सिंह – भारत का आर्थिक इतिहास, इलाहाबाद 1977 पृष्ठ. 44
7. डॉ. वी.एस. भार्गव – मध्ययुगीन भारत की समस्यांये (1200–1707) 1981 ग्वालीअर, भोपाल, पृष्ठ. 167.
8. डॉ. आर्शिवादीलाल श्रीवास्तव – मुगलकालीन भारत 1989 आग्रा पृष्ठ. 114, 115

9.डॉ. वी.एस. भार्गव	–	मध्ययुगीन भारत की समस्यांये (1200–1707) 1981 ग्वालीअर, भोपाल पृष्ठ. 167.
10.डॉ. आर्शिवादीलाल श्रीवास्तव	–	मुगलकालीन भारत 1989 आग्रा पृष्ठ. 497
11.बाबर	–	बाबरनामा (हेन्रीबेवरीज) दिल्ली , 1970 पृष्ठ. 223
12.ओ.पी. सिंह	–	भारत का आर्थिक इतिहास, इलाहाबाद 1977 पृष्ठ. 45

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com